पत्र

बफ़लो, न्यूयॉर्क
20 मार्च, 1995

प्रिय नित्या,

तुम्हारा 17 जनवरी का पत्र मिला। तुम प्रतियोगिताओं में भाग ले
रही हो, ये पढ़ कर बड़ा अच्छा लगा। लेकिन एक बात ध्यान में
रखना-जीतने पर घमंड से बचना और प्रथम न आने पर मन छोटा
मत करना। जीत महत्वपूर्ण है लेकिन अपनी पूरी क्षमता से
प्रतियोगिता में भाग लेना भी अपने आप में एक उपलब्धि है। तुमने
सेंट्स एवं डॉलर की फ़रमाइश की है, ज़रूर लाऊँगा लेकिन मेरा
ख्याल है कि घर में अमरीकी सिक्के तथा नोट होने चाहिए। अस्मि
का दाखिला तुम्हारे स्कूल में हो गया, ये अच्छा हुआ। अब तुम्हें एक
दूसरे से भिड़ंत और स्नेह का आदान-प्रादान करने के लिए शाम का
इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। अस्मिता का अँग्रेज़ी लहज़े में बोलने का
शौक बुरा नहीं। बस एहतियात ये रखो कि हिंदी बोलो तो हिंदी,
अँग्रेज़ी बोलो तो अँग्रेज़ी। हर वाक्य में दो भाषाओं की खिचड़ी
अधकचरेपन की निशानी है। सिर्फ़ यदा-कदा तालमेल होना चाहिए।
यहाँ बर्फ़ पिघल गई है। बसंत आने को है। बसंत के स्वागत में
कौन-सा राग गाते हैं – मैं नहीं जानता। अस्मिता को आशीर्वाद।

सस्नेह
नरेंद्रनाथ